षट्खंडागम पुस्तक-५ (फोल्डर नं. ००१३९९)

मुख्य टाइटल
विषयसूची
प्राक्कथन ---------- १-३
Introduction ---------- i-ii
१. धवलका गणितशास्त्र ---------- १-२८
२. कन्नड प्रशस्ति ---------- २९-३०
३. शंका-समाधान ---------- ३०-३६
४. विषय परिचय ---------- ३६-४३
५. विषय सूची ---------- ४४-५९
६. शुद्धिपत्र ---------- ६०-६३
मूल, अनुवद और टिप्पण ---------- १-३५०
अन्तरानुगम ---------- १-१७९
विषयकी उत्थानिका ---------- १-४
धवलाकारका मंगलाचरण और प्रतिज्ञा ---------- १
अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश भेद कथन ---------- १
नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र. काल और भाव... ---------- १-३
कौनसे अन्तरसे प्रयोजन है... ---------- ३
अन्तरानुगमका स्वरूप तथा उसक् द्विविध... ---------- ३
ओघसे अन्तरानुगमनिर्देश ---------- ४-२२
मिथ्यादृष्टि जीवोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा... ---------- ४-५
मिथ्यादृष्टि जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा... ---------- ५
सम्यक्त्व छूटनेके पश्चात् होनेवाला अन्तिम मिथ्यात्व... ---------- ५
मिथ्यादृष्टि जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा... ---------- ६
सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि... ---------- ७
उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर-निरूपण ---------- ८
सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि... ---------- ९-११
उपर्युक्त जीवोंका सोदाहरण उत्कृष्ट अन्तर ---------- ११-१३
असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर... ---------- १३-१७
चारों उपशामक गुणस्थानोंका नाना और एक जीवकी अपेक्षा... ---------- १७-२०
चारों क्षपक और अयोगिकेवलीका नाना... ---------- २०-२१
सयोगिकेवलीके नाना और एक जीवकी अपेक्षा... ---------- २१
आदेशसे अन्तरानुगमनिर्देश ---------- २२-१७९
गतिमार्गणा ---------- २२-३१
नरकगति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि और असंयत... ---------- २२-३३
नारकियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि...---------- २४-२६
प्रथम पृथिवीसे लेकर... ---------- २७-२८
सातों पृथिवियोंके सासादन...---------- २९-३१
तिर्यंचगति
तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका नाना और एक जीवकी...---------- ३१-३२
तिर्यंच और मनुष्य जन्मके कितने समय...---------- ३२
सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे लेकर... ---------- ३३-३७
पंचेन्द्रियतिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंचपर्याप्त और... ---------- ३७-३८
तीनों प्रकारके तिर्यंचोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि... ---------- ३८-४१
तीनों प्रकारके असंयतसम्यग्दृष्टि...---------- ४१-४३
तीनों प्रकारके संयतासंयत तिर्यंचोंका... ---------- ४३-४५
पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्तकोंका... ---------- ४५-४६
मनुष्यगति
मनुष्य, मनुष्यपर्याप्तक और मनुष्यनी...---------- ४६-४७
भोगभूमिज मनुष्योंमें जन्म लेनेके...---------- ४७
उक्त तीनों प्रकारके सासादनसम्यग्दृष्टि... ---------- ४८-५०
तीनों प्रकारके असंयतसम्यग्दृष्टि...---------- ५०-५१
संयतासंयतसे लेकर अप्रमत्त संयत... ---------- ५१-५३
चारों उपशामक मनुष्यत्रिकोंका अन्तर---------- ५३-५५
चारों क्षपक, अयोगिकेवली और सयोगिकेवली... ---------- ५५-५६
लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्योंका अन्तर---------- ५६-५७
देवगति ---------- ५७-६४
मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि देवोंका अन्तर ---------- ५७-५८
सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि... ---------- ५९-६२
भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी तथा सौधर्म-ईशानकल्पसे लेकर... ---------- ६१-६२
उक्त देवोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि और... ---------- ६२
आनतकल्पसे लेकर नवग्रैवेयक...---------- ६२-६३
उक्त कल्पोंके सासादनसम्यग्दृष्टि और...---------- ६४
नव अनुदिश और पांच अनुत्तरविमानवासी देवोंमें...---------- ६४
इन्द्रियमार्गणा---------- ६५-७७
एकेन्द्रिय जीवोंका अन्तर---------- ६५-६६
देव मिथ्यादृष्टिको एकेन्द्रियोंमें ले जाकर... ---------- ६५
एकेन्द्रिय जीवको त्रसकायिक जीवोंमें... ---------- ६६
बादर एकेन्द्रिय जीवोंका अन्तर---------- ६६-६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बादर एकेन्द्रियपर्याप्त और बादर... ६७
सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय... ६७-६८
द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और... ६८-६९
पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तक मिथ्यादृष्टि... ६९-७१
असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर... ७१-७५
पंचेन्द्रियपर्याप्तकोंके सागरोपमशतपृथक्त्वप्रमाण... ७३
पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें ७५-७६
उक्त जीवोंमें चारों क्षपक... ७७
पंचेन्द्रिय लब्धपर्याप्तकोंका अन्तर ७७
कायमार्गणा ७८-८७
पृथिवीकायिक आदि चार स्थावर... ७८
वनस्पतिकायिक बादर, सूक्ष्म और... ७९-८०
त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तकोंमें.. ८०-८६
त्रसकायिक ब्ध्यपर्याप्तकोंका अन्तर ८६-८७
योगमार्गणा ८७-९४
पांचों मनोयोगी, पांचो वचनयोगी, काययोगी... ८७
उक्त योगवाले सासादन... ८८
उक्त योगवाले चारों उपशामक और... ८८-८९
एक योगके परिणमन-कालसे गुणस्थानका काल... ८९
औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि... ८९-९१
वैक्रियिककायगी चारों गुणस्थानवर्ती... ९१
वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि... ९१-९३
आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी... ९३
कार्मणकाययोगी मिथयादृष्टि... ९३
वेदमार्गणा ९४-१११
स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर ९४
स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि और... ९५-९६
असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर... ९७-९८
स्त्रीवेदी अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण... ९९-१००
स्त्रीवेदी अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण... १००
पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अन्तर १००
पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि और... १०१
असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर... १०२-१०४
पुरुषवेदी अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण... १०४-१०६
नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर १०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर... ---------- १०७-१०८
अपगतवेदी जीवोंका अन्तर ---------- १०९-१११
कषायमार्गणा ---------- १११-११३
मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्पराय... ---------- १११-११२
अकषायी जीवंका अन्तर ---------- ११३
ज्ञानमार्गणा ---------- ११४-१२७
मत्यज्ञानी, श्रुतज्ञानी और विभंगज्ञानी... ---------- ११४
आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और... ---------- ११४-११६
उक्त तीनों ज्ञानवाले संयतासंयतोंका तदन्तर्गत... ---------- ११६-११९
संज्ञी, सम्मूर्च्छइम पर्याप्तक जीवोंमें... ---------- ११८-११९
तीनों ज्ञानवाले प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंका अन्तर... ---------- ११९-१२२
तीनों ज्ञानवाले चारों उपशामक और चारों क्षपकोंका... ---------- १२२-१२४
प्रमत्तसंयतसे लेकर क्षीणकषाय... ---------- १२४-१२७
केवलज्ञानी जीवोंका अन्तर ---------- १२७
संयममार्गणा ---------- १२८-१३५
प्रमत्तसंयतसे लेकर अयोगि... ---------- १२८
सामायिक और छेदोपस्थापनासंयमी प्रमत्तसंयतादि... ---------- १२८-१३१
परिहारशुद्धिसंयमी प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंका अन्तर ---------- १३१
सूक्ष्मसाम्परायसंयमी उपशामक... ---------- १३२
यथाख्यातविहारसंयमी चारों गुणस्थानोंका अन्तर ---------- १३२
संयतासंयतोंका अन्तर ---------- १३३
असंयमी चारों गुणस्थानोंका पृथक् पृथक् अन्तर ---------- १३३-१३५
दर्शनमार्गणा ---------- १३५-१४३
चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर ---------- १३५
चक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टि और... ---------- १३६-१३७
असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर... ---------- १३८-१४१
चक्षुदर्शनी चारों उपशामकोंका अन्तर ---------- १४१
चक्षुदर्शनी चारों क्षपकोंका अन्तर ---------- १४२
अचक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी और... ---------- १४३
लेश्यामार्गणा ---------- १४३-१५४
कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावाले... ---------- १४३-१४५
उक्त तीनों अशुभ लेश्यावाले... ---------- १४५-१४६
मिथ्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत... ---------- १४६-१४९
मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगिकेवली... ---------- १४९-१५४
भव्यमार्गणा ---------- १५४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समस्त गुणस्थानवर्ती भव्य जीवोंका अन्तर---------- १५४
अभव्य जीवोंका अन्तर ---------- १५४
सम्यक्त्वमार्गणा---------- १५५-१७१
असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अयोगिकेवली...---------- १५५-१५६
क्षायिकसम्यक्त्वी असंयत...---------- १५६-१५७
क्षायिकसम्यक्त्वी संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और... ---------- १५७-१६०
क्षायिकसम्यक्त्वी चारों उपशामकोंका अन्तर ---------- १६०-१६१
क्षायिकसम्यक्त्वी चारों क्षपक... ---------- १६१-१६२
असंयतसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानवर्ती...---------- १६२-१६५
असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर उपशान्तकषाय.... ---------- १६५-१७०
सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और...---------- १७०-१७१
संज्ञिमार्गणा---------- १७१-१७२
मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर...---------- १७१-१७२
असंज्ञी जीवोंका अन्तर---------- १७२
आहारमार्गणा---------- १७३-१७९
आहारक मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि... ---------- १७३-१७४
असंयतसम्यग्दृष्टि आदि चार गुमस्थानवाले...---------- १७४-१७७
आहारक चौं उपशामकोंका अन्तर---------- १७७-१७८
आहारक चारों क्षपक और...---------- १७८
अनाहारक जीवोंका अन्तर---------- १७८-१७९
भावानुगम ---------- १८१-२३८
विषयकी उत्थानिका ---------- १८३-१९३
धवलाकारका मंगलाचरण---------- १८३
भावानुगमकी अपेक्षा निर्देशभेद-निरूपण ---------- १८३
नामभाव, स्थापनाभाव...---------- १८३-१८५
प्रकृतमें नोगामभावभावसे प्रयोजनका उल्लेख---------- १८५
नाम और स्थापनामें कोई विशेषता...---------- १८५-१८६
औदायिकादि पांच भावोंमेंसे प्रकृतमें...---------- १८६-१८७
निर्देश, स्वामित्व आदि छह अनुयोगद्वारोंसे...---------- १८७-१८८
औदयिकभावके स्थान और विकल्पकी अपेक्षा...---------- १८९
असिद्धत्व किसे कहते हैं... ---------- १८९
औपशमिकभावके स्थान और विकल्पकी अपेक्षा... ---------- १९०
औपसमिकचारित्रके सात भेदोंका विवरण---------- १९०
क्षायिकभावके स्थान और विकल्पकी अपेक्षा भेद---------- १९०-१९१
क्षायपशमिकभावके स्थान और विकल्पकी अपेक्षा भेद---------- १९१-१९२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पारिणामिकभावके भेद---------- १९२
सान्निपातिकभावका स्वरूप...---------- १९३
भंगोंके निकालनेके लिए करणसूत्र---------- १९३
ओघसे भावानुगमनिर्देश ---------- १९४-२०६
मिथ्यादृष्टि जीवके भावका निरूपण---------- १९४
मिथ्यादृष्टि जीवके अन्य भी ज्ञान-दर्शनादिक भाव पाये जाते हैं...---------- १९४-१९६
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवके भावका निरूपण---------- १९६
दूसरे निमित्तसे उत्पन्न हुए भावको...---------- १९६
सत्त्व, प्रमेयत्व आदिक भाव...---------- १९७
सासादनसम्यग्दृष्टिपना भी सम्यक्त्व... ---------- १९७
सासादनसमय्क्त्वको छोड़ कर अन्य... ---------- १९७
सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवके भावका अनेक... ---------- १९८-१९९
असंयतसम्यग्दृष्टि जीवके भावोंका...---------- १९९-२००
असंयतसम्यग्दृष्टिका असंयतत्व... ---------- २०१
संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत... ---------- २०१-२०४
दर्शनमोहनीयकर्मके उपशम... ---------- २०३
चारों उपसामकोंके भावोंका निरूपण ---------- २०४-२०५
मोहनीयकर्मके उपशमसे रहित अपूर्वकरण... ---------- २०४-२०५
चारों क्षपक, सयोगिकेवली...---------- २०५-२०६
आदेशसे भावानुगमनिर्देश---------- २०६-२३८
गतिमार्गणा ---------- २०६-२१६
नरकगति---------- २०६-२१२
नारकी मिथ्यादृष्टि जीवोंके भाव---------- २०६
सम्यग्मिथ्यात्वप्रकृतिके सर्वघाती...---------- २०६-२०७
नारकी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके भाव---------- २०७
जब कि अनन्तानुबन्धी कषायके...---------- २०७
नारकी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके... ---------- २०८
नारकी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके भाव---------- २०८-२०९
असंयतसम्यग्दृष्टि नारकियोंका...---------- २०९
प्रथम पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक... ---------- २०९-२१२
तिर्यंचगति---------- २१२-२१३
सामान्य तिर्यंच, पंचेन्द्रिय,... ---------- २१३
मनुष्यगति ---------- २१३
सामान्यमनुष्य, पर्याप्तमनुष्य और... ---------- २१३
लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य और तिर्यंचोंके भावोंका...---------- २१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवगति ---------- २१४-२१६
चारों गुणस्थानवर्ती देवोंके भाव ---------- २१४
भवनवासी, व्यन्तर ज्योतिषी देव... ---------- २१४-२१५
सौधर्म ईशानकल्पसे... ---------- २१५-२१६
इन्द्रियमार्गणा ---------- २१६-२१७
मिथ्यादृष्टिसे लेकर... ---------- २१६-२१७
कायमार्गणा ---------- २१७-२१८
त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तक... ---------- २१७-२१८
योगमार्गणा ---------- २१८-२२१
पांचों मनोयोगी, पांचो वचनयोगी... ---------- २१८
औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि... ---------- २१८-२१९
औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि... ---------- २१९
चारों गुमस्थानवर्ती वैक्रियिक काययोगी .... ---------- २१९-२२०
वैक्रियिकमिश्रकाययोगी... ---------- २२०
आहारककायगी और आहारकमिश्रकाययोगी... ---------- २२०
कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि सासादन.... ---------- २२१
वेदमार्गणा ---------- २२१-२२२
स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और नपुंसकवेदी... ---------- २२१
अपगतवेदी जीवोंके भाव ---------- २२२
अपगतवेदी किसे कहा जाय... ---------- २२२
कषायमार्गणा ---------- २२३
चतुष्कषायी जीवोंके भाव ---------- २२३
अकषायी जीवोंके भाव ---------- २२३
कषाय क्या वस्तु है,... ---------- २२३
ज्ञानमार्गणा ---------- २२४-२२६
मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी और विभंगज्ञानी जीवोंके भाव ---------- २२४-२२५
मिथ्यादृष्टि जीवोंके ज्ञानको अज्ञानपना कैसे है ---------- २२४-२२५
मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय और... ---------- २२५-२२६
सयोग यह कौनसा भाव है... ---------- २२५-२२६
संयममार्गणा ---------- २२७-२२८
प्रमत्तसंयतसे लेकर अयोगिकेवली... ---------- २२७
सामायिक, छेदोपस्थापना... ---------- २२७
यथाख्यातसंयमी, संयमासंयमी और असंयमी... ---------- २२८
दर्शनमार्गणा ---------- २२८-२२९
चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी जीवोंके भाव ---------- २२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवधिदर्शनी और केवलदर्शनी जीवोंके भाव---------- २२९
लेश्यामार्गणा ---------- २२९-२३०
कृष्म, नील और कापोतलेश्यावाले... ---------- २२९
तेजोलेश्या और पद्मलेश्या वाले...---------- २२९
शुक्ललेश्यावाले आदिके तेरह गुणस्थानवर्ती...---------- २३०
भव्यमार्गणा ---------- २३०-२३१
सर्वगुणस्थानवर्ती भवय जीवोंके भाव---------- २३०
अभव्य जीवोंके भाव---------- २३०
अभव्यमार्गणामें गुणस्थानके भावको न कह कर...---------- २३०-२३१
सम्यक्त्वमार्गणा---------- २३१-२३७
असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर... ---------- २३१
उक्त गुणस्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टि... ---------- २३१-२३४
असंयतसम्यग्दृष्टि आदि चार...---------- २३४-२३५
असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर... ---------- २३५-२३६
सासादनसम्यग्दृष्टि.... ---------- २३६-२३७
संज्ञिमार्गणा---------- २३७
मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषाय...---------- २३७
असंज्ञी जीवोंके भाव... ---------- २३७
आहारमार्गणा---------- २३८
मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगिकेवली...---------- २३८
अनाहारक जीवोंके भाव...---------- २३८
अल्पबहुत्वानुगम---------- २३९-३५०
विषयकी उत्थानिका ---------- २४१-३४३
धवलाकारका मंगलाचरण और प्रतिज्ञा---------- २४१
अल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश-भेद-निरूपण---------- २४१
नाम-अल्पबहुत्व...---------- २४१-२४२
प्रकृतमें सचित्त द्रव्याल्पबहुत्वसे... ---------- २४२
निर्देश, स्वामित्व, आदि छह...---------- २४२-२४३
ओघ और आदेशका स्वरूप ---------- २४३
ओघसे अल्पबहुत्वानुगमनिर्देश---------- २४३-२६१
अपूर्वकरणादि तीन गुणस्थानवर्ती...---------- २४३-२४४
अपूर्वकरण दिके कालोंमें परस्पर हीनाधिकता... ---------- २४४
उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थोंका अल्पबहुत्व---------- २४५
क्षपक जीवोंका अल्पबहुत्व ---------- २४५-२४६
सयोगिकेवली और अयोगिकेवलीका प्रवेशकी अपेक्षा अल्पबहुत्व ---------- २४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयोगिकेवलीका संचयकालकी अपेक्षा अल्पबहुत्व---------- २४७
प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीवोंका अल्पबहुत्व---------- २४७-२४८
संयतासंयतोंका अल्पबहुत्व...---------- २४८
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका अल्पबहुत्व... ---------- २४८-२४९
सासादनसम्यग्दृष्टियोंका गुणकार...---------- २४९
सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयत सम्यग्दृष्टि और... ---------- २५०-२५३
असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें...---------- २५३-२५६
संयतासंयत गुणस्थानमें... ---------- २५६-२५७
प्रमत्त और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें..---------- २५८
पशामकऔर क्षपकोंमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व... ---------- २५८-२६१
आदेशसे अल्पबहुत्वानुगमनिर्देश---------- २६१-३५०
गतिमार्गणा ---------- २६१-२८७
नरकगति---------- २६१-२६७
सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि...---------- २६१-२६३
असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें नारकियोंका... ---------- २६३-२६४
पृथक्त्व शब्दका अर्थ वैपुल्यवाची कैसे लिया...---------- २६४
सातों पृथिवियोंके नारकी जीवोंका पृथक् पृथक् अल्पबहुत्व---------- २६४-२६७
अन्तर्मुहूर्तका अर्थ असंख्या आवलियां लेनेसे...---------- २६६
तिर्यंचगति---------- २६८-२७३
सामान्यतिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच... ---------- २६८-२७०
असंयतसम्यग्दृष्टि और असंयतासंयत...---------- २७०-२७३
असंयत तिर्यंचोंमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे...---------- २७१
संयतासंयत तिर्यंचोंमें क्षायिक... ---------- २७२
मनुष्यगति ---------- २७३-२८०
सामान्य मनुष्य, पर्याप्त मनुष्य और मनुष्यनियोंके...---------- २७३
देवगति ---------- २८०-२८७
चारों गुणस्थानवर्ती देवोंका अल्पबहुत्व---------- २८०
असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें... ---------- २८०-२८१
भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी, देव और देवियोंका... ---------- २८१-२८२
सौधर्म-ईशानकल्पसे लेकर...---------- २८२-२८६
सर्वार्थसिद्धिमें असंख्यात... ---------- २८६-२८७
इन्द्रियमार्गणा---------- २८८-२८९
पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय... ---------- २८८
इन्द्रियमार्गणामें स्वस्थान... ---------- २८९
कायमार्गणा ---------- २८९-२९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त.. ---------- २८९
योगमार्गणा ---------- २९०-३००
पांचो मनोयोगी, पांचो वचनयोगी... ---------- २९०-२९४
औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवली... ---------- २९४-२९५
वैक्रियककाययोगी जीवोंका अल्पबहुत्व ---------- २९५-२९६
वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि... ---------- २९७
आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी... ---------- २९७-२९८
उपशमसम्यक्त्वके साथ आहारकऋद्धि... ---------- २९८
कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली... ---------- २९८-२९९
असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें कार्मणकाययोगी... ---------- २९९-३००
पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण... ---------- ३००
वेदमार्गणा ---------- ३००-३११
प्रारम्भके नव गुणस्थानवर्ती... ---------- ३००-३०२
असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत... ---------- ३०२-३०४
प्रारम्भके नव गुणस्थानवर्ती... ---------- ३०४-३०६
असंयतसम्यग्दृष्टि आदि छह... ---------- ३०६-३०७
आदिके नव गुणस्थानवर्ती नपुंसकवेदी... ---------- ३०७-३०८
असंयतसम्यग्दृष्टि आदि छह गुणस्थानवर्ती... ---------- ३०९-३१०
अपगतवेदी जीवोंका अल्पबहुत्व ---------- ३११
कषायमार्गणा ---------- ३१२-३१६
चारों कषायवाले जीवोंका अल्पबहुत्व ---------- ३१२-३१४
अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, इन दो उपसामक... ---------- ३१२
असंयतसम्यग्दृष्टि आदि सात... ---------- ३१५-३१६
अकषायी जीवोंका अल्पबहुत्व ---------- ३१६
ज्ञानमार्गणा ---------- ३१६-३२२
मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी और... ---------- ३१६-३१७
आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और... ---------- ३१७-३१९
उक्त जीवोंका दसवें गुणस्थान... ---------- ३१९
प्रमत्तसंयतसे लेकर क्षीमकषाय... ---------- ३२०
उक्त जीवोंका दसवें गुणस्थान तक... ---------- ३२१
केवलज्ञानी सयोगिकेवली और अयोगिकेवली... ---------- ३२१-३२२
संयममार्गणा ---------- ३२२-३३०
सामान्य संयतोंका प्रमत्त.. ---------- ३२२-३२४
उक्त जीवोंका दसवें गुमस्थान... ---------- ३२४-३२५
प्रमत्तसंयतादि चार गुणस्थानवर्ती... ---------- ३२५-३२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्त जीवोंका सम्यक्त्व.... ---------- ३२६
परिहारविशुद्धिसंयमी प्रमत्त और... ---------- ३२७
उक्त जीवोंका सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व ---------- ३२७
परिहारविशुद्धिसंयतोंके उपशमस्यक्त्व... ---------- ३२७
सूक्ष्मसांपरायिकसंयमी उपशामक... ---------- ३२८
यथाख्यातविहारशुद्धिसंयमतोंका अल्पबहुत्व ---------- ३२८
संयतासंयतोंका अल्पबहुत्व... ---------- ३२८
संयतासंयत और असंयतसम्यग्दृष्टि... ---------- ३२८-३३०
दर्शनमार्गणा ---------- ३३१
चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी... ---------- ३३१
लेश्यामार्गणा ---------- ३३२-३३९
दिके चार गुणस्थानवर्ती, कृष्म, नील और कापोत... ---------- ३३२
असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें... ---------- ३३२-३३३
आदिके सात गुमस्थानवर्ती तेज और पद्मलेश्यावाले... ---------- ३३४-३३५
असंयतसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानोंमें.... ---------- ३३५
मिथ्यादृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती... ---------- ३३६-३३८
असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर... ---------- ३३८-३३९
भव्यमार्गणा ---------- ३३९-३४०
सर्वगुणस्थानवर्ती भव्य जीवोंका अल्पबहुत्व ---------- ३३९
अभव्य जीवोंका अल्पबहुत्व ---------- ३४०
सम्यक्त्वमार्गणा ---------- ३४०-३४५
सामान्य सम्यग्दृष्टि जीवोंका अल्पबहुत्व ---------- ३४०
चौथे गुणस्थानसे लेकर चौदहवें गुणस्थान तक... ---------- ३४०-३४२
असंयतसम्यग्दृष्टि आदि चार... ---------- ३४२
असंयतसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानवर्ती... ---------- ३४२-३४३
उक्त जीवोंके सम्यक्त्वसम्बन्धी... ---------- ३४३
असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर... ---------- ३४४
उक्त जीवोंके सम्यक्त्वसंबंधी अल्पबहुत्वके ---------- ३४५
सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि... ---------- ३४५
संज्ञिमार्गणा ---------- ३४५-३४६
आदिके बारह गुणस्थानवर्ती... ---------- ३४५
असंज्ञी जीवोंके अल्पबहुत्वका अभाव-निरूपण ---------- ३४६
आहारमार्गणा ---------- ३४६-३५०
दिके तेरह गुणस्थानवर्ती... ---------- ३४६-३४७
चौथेसे दसवें गुणस्थान तक... ---------- ३४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनाहारक जीवोंका अल्पबहुत्व ---------- ३४८-३४९
असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें अनाहाक जीवोंका... ---------- ३४९-३५०
परिशिष्ट ---------- १-३८
अन्तरप्ररूपणा-सूत्रपाठ ---------- १
भावप्ररूपणा सूत्रपाठ---------- १७
अल्पबहुत्व सूत्रपाठ---------- २१
अवतरण-गाथा सूची ---------- ३३
न्यायोक्तियां ---------- ३४
ग्रंथोल्लेख ---------- ३४
पारिभाषिक शब्दसूची ---------- ३५-३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org